एक क्षण में ही जिम्मी का प्रिय वरमा, इस्पात के दरवाज़े को निर्विरोध काटने लगा। दस मिनट में ही अपने खुद के, चोरी करने के रिकार्ड को, तोड़ते हुए, उसने चटखनी खिसका कर, दरवाजा खोल दिया।

लगभग मृत, किन्तु सुरक्षित अगाथा अपनी माँ की बाँहों में आ गयी।

जिम्मी वैलएटाइन ने अपना कोट पहिना और वह बाड़ के उस तरफ मुख्य द्वार की ओर बाहर रवाना हुआ। जाते हुए उसे ख्याल आया, जैसे कोई परिचित स्वर, पीछे से पुकार उठा है, "राल्फ!" पर वह झिझका नहीं।

दरवाज़े पर एक मोटा-सा आदमी उसकी राह में खड़ा था।

विचित्र मुस्कराहट के साथ जिम्मी ने कहा, "कहो बैन! आखिर तुम्हें पता चल ही गया! खैर, चलो! मैं समझता हूँ – अब कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता।"

पर उस समय बेन प्राइस भी कुछ विचित्र व्यवहार कर गया।

उसने कहा, "मेरे ख्याल से आप भूल करते हैं मिस्टर स्पेंसर! मैं आपको पहचान गया हूँ इसका विश्वास मत कीजिये। आपकी बग्घी प्रतीक्षा कर रही है।"

और बेन प्राइस मुड़कर सड़क पर घूमने चल दिया।

क्रिसमस का भोजा

डिसलिंग डिक ने बड़ी सावधनी से मवेशियों के डिब्बे का दरवाजा खोला; क्योंकि वह शहर के कानून की धारा नं. ५७१६ से अच्छी तरह परिचित था। इस दफा के अनुसार किसी भी व्यक्ति को सन्देह पर गिरफ्तार किया जा सकता था (जो शायद अवैधानिक था) इसलिए नीचे उतरने से पहले उसने एक सेनापति जैसी सावधानी से सारे क्षेत्र का निरीक्षण किया।

दक्षिण के इस दानवीर, भुक्तभोगी, बड़े शहर में, जो आवारों के लिए सर्दियों का स्वर्ग था, उसे कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दिया। धक्के के पास जहाँ मालगाड़ी खड़ी हुई थी, सामान के ढेर के ढेर लगे थे। वातावरण, सामान ढँकने की पुरानी कनात की चिरपरिचित सड़ी हुई दुर्गन्ध से भरा हुआ था। मटमैली नदी जहाजों के बीच से, तेल की चिकनाहट लिये बह रही थी। चालमेट की दिशा में नदी का विशाल मोड़ वहाँ की दीपमालिका के प्रकाश में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। नदी के उस पार अलजीयर नामक उपनगर अस्तव्यस्त बिखरा हुआ था, जो आकाश के उस पार से ऊषा के आगमन के कारण और भी काला लग रहा था। किसी आने वाले जहाज को खींचने के लिए आये हुए मजबूत 'टग' की डरावनी सीटियाँ मानों ऊषा का स्वागत कर रही थीं। सब्जी और मछलियों से भरे कुछ इटालियन माल ढोने के जहाज किनारे के नजदीक सरक रहे थे। ठेलों और मालगाड़ियों के पहियों का अस्पष्ट कोलाहल जैसे पाताल से उठकर फैलता हुआ मालूम दे रहा था। परियों के समान नाचती छोटी छोटी किश्तियाँ अलसाई हुई सी, सुबह की मजदूरी में लग चुकी थीं।

'व्हिसलिंग' (सीटी बजानेवाला) डिक का सिर एकाएक डिब्बे के अन्दर हो लिया। रंगभूमि पर एक इतना प्रभावशाली और भव्य पात्र आ गया था, जिसे उसकी दृष्टि देखना नहीं चाहती थी। एक अतुलनीय विशालकाय पुलिस का सिपाही, चावल के बोरों का चक्कर लगाता हुआ, मालगाड़ी से कोई बीस गज की दूरी पर खड़ा था। अल्जीयर से दूर भोर के आकाश में ऊषा के आगमन का परिचित चमत्कार दिखाई दे रहा था, जिसे कानून का यह भव्य रक्षक तल्लीनता से देखने लगा। कुछ देर तक इस रंगबिरंगे धुँधले प्रकाश का, निष्पक्ष, शानशौकत से निरीक्षण करने के बाद, उसने इस विश्वास से पीठ फेरली कि वहाँ कानूनी हस्तक्षेप की गुँजाइश नहीं है, और सूर्योदय का काम बिना जाँच पड़ताल के भी आगे बढ़ सकता है। इसलिए उसने अपनी नजर चावल के बोरों की तरफ से हटा कर अन्दर की जेब से एक चपटी सी बोतल निकाली और उसे मुँह से लगाते हुए आकाश पर नजरें गड़ा दी।

'व्हिसलिंग' डिक की, जो पेशेवर आवारा था, इस अफसर से कुछ दोस्ताना ढंग की जान पहचान थी। पहले कई बार इसी धक्के के आसपास वे लोग रात में मिल चुके थे, क्योंकि यह सिपाही

भी संगीत प्रेमी था, और इस बेघरबार आवारा के सीटी बजाने के बढ़िया ढंग से प्रभावित था। फिर भी 'ह्विसलिंग' डिक ने मौजूदा परिस्थिति में जान पहचान को ताजा करना उचित नहीं समझा। किसी निर्जन धक्के के किनारे, पुलिस के सिपाही से मिलकर, उसे कुछ सुरीली तानें, सीटी बजाकर सुनाना, अलग बात है, और किसी मालगाड़ी के डब्बे में से पार होते हुए, उसी के द्वारा पकड़ा जाना, बिल्कुल अलग बात। इसलिए डिक रुक गया; क्योंकि वह जानता था कि चाहे न्यू आर्लियन्स का सिपाही ही क्यों न हो, कभी न कभी तो वह आगे पीछे होगा ही— भाग्य की यही विडम्बना है! महाकाय सिपाही 'फ्रिज' भी कुछ देर बाद, शाही ठाट से डिब्बों के बीच ओझल हो गया।

उचित समय तक रुक कर, 'ह्विसलिंग डिक' फुर्ती से जमीन पर कूद पड़ा। यथासम्भव, दैनिक मजदूरी पर जाने वाले किसी ईमानदार मजदूर का सा भाव चेहरे पर धारण करके, उसने रेल की पटरियाँ पार की। जिरोड़ स्ट्रीट के निर्जन मुहल्ले से होकर, लाफायत चौक की एक विशेष बेंच तक पहुँचने का उसका इरादा था। यहाँ पूर्व-योजनानुसार अपने एक साहसी साथी 'स्लिक' से वह मिलना चाहता था, जो एक दिन पहले ही मवेशियों के डब्बे में सफर करके, यहाँ पहुँच चुका था।

उन गन्दे और दुर्गन्धयुक्त गोदामों में अब तक अन्धेरे का साम्राज्य था। उनके बीच में से रास्ता ढूँढ़ कर आगे बढ़ते हुए 'ह्विसलिंग' डिक को अपनी पुरानी आदत याद आ गयी जिसकी वजह से उसका यह नाम पड़ा था। धीमी पर स्पष्ट, बुलबुल के से सुरीले स्वरों में वह सीटी बजाने लगा, जिसकी मधुर धुन तालाब में गिरती हुई वर्षा की बड़ी बड़ी बूँदों की रिमझिम पर गूँज उठी। उसने एक पुरानी तान छेड़ने की कोशिश की पर रियाज के अभाव में उसके स्वर सधे नहीं। सीटी पर आप पहाड़ी झरनों की कलकल, सरोवर के किनारे उगे हुए बेत के झुरमुटों की मरमर या अलसाये पंछियों की चहचहाट—कुछ भी बजा सकते हैं!

नुक्कड़ पर मुड़ते ही वह नीली वर्दी और पीतल के बटन वाले एक पहाड़ से टकरा गया।

वह पहाड़ शान्ति से बोला, "अच्छा तो तुम वापिस आ गये। अभी तो बर्फ पड़ने में दो हफ्ते की देर है और तुम सीटी बजाना भी भूल गये हो। तुम्हारी आखिरी तान का एक स्वर बिल्कुल गलत था।"

आत्मीयता का ढोंग करते हुए डिक बोला, "तुम संगीत के बारे में क्या जानो? जर्मनी के बेवूझ गँवार! तुम्हारा और संगीत का क्या रिश्ता? ध्यान से सुनो—मैं इस तरह बजा रहा था।"

उसने ओठों को गोल किया, लेकिन सिपाही हाथ के इशारे से उसे रोकता हुआ बोला, "ठहरो, पहले बजाने का ढंग सीखो और यह भी याद रक्खो, तुम्हारे जैसे आवारा कुछ भी नहीं सीख सकते।"

फ्रिज की घनी मूछें गोल हो गयीं और उनकी गहराई से बंशी की सी मधुर और मन्द्र सीटी की आवाज सुनाई दी। जिन तानों को डिक बजा रहा था उन्हीं को उसने दुहराया। उसकी स्वर-साधना मामूली पर सही थी और उसने जिसकी आलोचना की थी, उसी तान पर विशेष जोर दिया।

"इसमें धैवत शुद्ध लगता है कोमल नहीं। खैर तुम्हें खुशी होनी चाहिये कि तुम्हारी मुलाकात पहले मुझ से ही हुई। एक घण्टे बाद मेरा फर्ज होगा कि मैं तुम्हें पकड़ कर जेल के दूसरे पंछियों के साथ सीटी बजाने लिए थाने में बन्द कर दूँ। अभी अभी हुक्म आया है कि सूर्योदय के बाद तुरन्त सब आवारों को पकड़ लिया जाये।"

"क्या कहा?"

"हाँ जिनकी आजीविका का कोई साधन दिखाई नहीं दे ऐसे सब आवारों को गिरफ्तार किया जायेगा। सजा मामूली है—पन्द्रह डालर जुर्माना या तीस दिन की जेल।"

"क्या सच? या मुझे बना रहे हो?"

"नहीं नहीं, इससे बढ़िया 'टिप' तुम्हें मिल ही नहीं सकती। मैंने तुमसे इसलिए कहा कि मुझे विश्वास है कि तुम दूसरे आवारों जितने बुरे नहीं हो और इसलिए भी कि कुछ तानें तुम मुझसे भी बेहतर बजा लेते हो। अब मेरी बात मानो और कुछ दिनों के लिए शहर छोड़ कर चले जाओ। और ध्यान रखना, जाते जाते किसी सिपाही से मत टकरा जाना। नमस्ते।"

श्रीमती आर्लीयन्स जिसके ममतामय आँचल की छाया में आश्रय खोजते हुये हर वर्ष आवारों का दल आता था, अब इन अनचाहे महमानों से ऊब गयी थी।

उस भीमकाय पुलिसमैन के जाने के बाद कुछ समय तक तो डिक अन्यमनस्क-सा खड़ा रहा।

समय पर किराया अदा न करने के कारण, मकान से निकाले जाने वाले किरायेदार की तरह उसका मन इस ज्यादती के प्रति रोष से भर गया। उसने मन ही मन मनसूबे बाँधे थे कि सुखस्वप्नों में आराम से दिन बिताकर वह अपने साथी से मिलेगा, जहाजों से उतारते समय नीचे गिरे हुए केले और नारियल चबाता हुआ वह धक्के पर दिन भर घूमेगा। शाम को किसी सदावत में, जहाँ से बाहर निकाले जाने की कोई सम्भावना नहीं, भर पेट भोजन करके मुँह में पाइप दबाये किसी हरे भरे बगीचे में घूमेगा और धक्के के पास ही किसी छायादार जगह पर लेट जायेगा। लेकिन यहाँ तो देश निकाले का हुक्म मिल चुका था—ऐसा हुक्म जिसका पालन करना ही चाहिये। इसलिए सतर्कता से पुलिस के सिपाहियों को टालता हुआ वह आश्रय की खोज में देहात की तरफ बढ़ा। 'गाँव में कुछ दिन गुजारने में भी कोई बुराई नहीं। बर्फ पड़ने की हल्की-सी संभावना के सिवाय कोई विशेष अन्तर नहीं दिखाई देता।'

कुछ भी हो, नदी के पास से गाँव जानेवाली सड़क पर फ्रेंच मार्केट के सामने से डिक गुजरा, तब उसका दिल डूब रहा था। सुरक्षा के ख्याल से वह अब भी दुनिया वालों की नजरों में दैनिक मजदूरी पर जाने वाले ईमानदार मजदूर का ही पार्ट अदा कर रहा था। उसके इस चक्कर में न आकर भी मार्केट के एक दुकानदार ने उसे उसके प्रचलित नाम से पुकारा, जिससे चकित हो वह रुक गया। अपने काइयाँपन से खुश होकर दुकानदार ने उसे एक रोटी और कुछ मांस दिया, जिससे नाश्ते की समस्या तो हल हो गयी।

भौगोलिक कारणों से पक्की सड़क जब नदी के किनारे से दूर हटने लगी, तो किनारे किनारे धक्के के ऊपर की पगडंडियों पर वह निर्वासित, आगे बढ़ने लगा। उपनगरों के निवासी उसे सन्देह भरी आँखों से देखने लगे परन्तु कुछ लोगों ने शहर के इस निर्दय नये कानून के खिलाफ, शिकायत भी व्यक्त की। डिक को शहर की भीड़भाड़ का एकान्त और वहाँ के कोलाहल में मिलनेवाली सुरक्षा, याद आने लगी।

चलते चलते, वह छः मील दूर चालमेट पहुँचा, जहाँ विशाल और भीषण उद्योग को देखते ही वह डर गया। वहाँ एक नया बन्दरगाह बनाने की योजना थी, जिसके धक्के बनाने का काम चल रहा था। कम्प्रेशर मशीनों की घड़ाघड़ हो रही थी और कुदाली, फावड़े और ठेले चारों ओर से मानो साँप की तरह डस लेने को दौड़े आ रहे थे। एक अकड़ू-सा मुकादम उसके बाजुओं

को जाँचता हुआ, रँगरूट भरती करने वाले अफ़सर की दृष्टि से, घूरने लगा। चारों तरफ काले, और धूल से सने मनुष्य पसीना बहा रहे थे। इस दृश्य से आतंकित हो कर वह भाग खड़ा हुआ।

दोपहर होते होते वह उस महान नदी के विशाल, और शान्त मैदानों में स्थित, बागानों वाले प्रदेश में पहुँच गया। उसकी दृष्टि ऊख के ऐसे विशाल खेतों पर पड़ी जिनका दूसरा सिरा क्षितिज तक भी दिखाई नहीं देता था। चीनी बनाने का मौसम काफी आगे बढ़ चुका था। चारों ओर खेतों की कटाई हो रही थी और ऊख से भरी गाड़ियाँ जाती हुई नज़र आ रही थीं। गाड़ियों के हब्शी चालक अपनी सुरीली और मधुर आवाज से खच्चरों को तेज़ चलने के लिए प्रेरित कर रहे थे। नीले आकाश के चौखटे में जड़े हुए से गहरे हरे रंग के वृक्षों के झुण्ड ज़मींदार के निवास का स्थान घोषित कर रहे थे। समुद्र के बीच के रोशनीघरों की तरह शक्कर के कारखानों की चिमनियाँ मीलों दूर से दिखाई दे रही थीं।

एक स्थान पर पहुँचते ही 'व्हिसलिंग' डिक की अनुभवी नाक में मछली तलने की खुशबू आयी। शिकार पर झपटने वाले किसी शिकारी कुत्ते की स्फूर्ती से वह आगे बढ़ा। धक्के के उस ओर एक बूढ़े निष्ठावान मछुए का खेमा था जिसे उसने अपने गानों और गप्पों से मोहित कर लिया। परिणामस्वरूप किसी सेनापति जैसी शान से उसने वहाँ दावत उड़ायी और फिर पेड़ों के नीचे किसी दार्शनिक की अदा से लेटकर उसने दिन के सबसे बुरे तीन घण्टे बिता दिये।

तीसरे पहर उठ कर जब वह अपनी हिजरत में आगे बढ़ा, तब दिन की मादक और सुहावनी हवा का स्थान बर्फीले पवन ने ले लिया था। शीतल रात के इस अग्रदूत का इशारा दिमाग तक पहुँचते ही, इस फक्कड़ ने अपनी चाल कुछ तेज़ कर दी और वह आश्रय ढूँढने की चिन्ता करने लगा। नदी-तट के उतार चढ़ाव का ईमानदारी से साथ देने वाली, उस सड़क पर वह लक्ष्यहीन आगे बढ़ा जा रहा था। सड़क के बीच में बनी हुई पहियों की लीक तक झाड़ियाँ और घास उग आयी थी। उनमें रहने वाले तरह तरह के जीवजन्तु तीव्र स्वरों में गुँजार करते हुए, उसका पीछा करने लगे। अँधेरा बढ़ने के साथ, ठंड भी बढ़ी और मच्छरों की भन्नाहट तो एक चिड़चिड़ी और लालची गुर्राहट में बदल गयी जिसने और सभी आवाज़ों को दबा दिया। उसके दाहिनी ओर आकाश

की पृष्ठभूमि मे हरी रोशनी से युक्त एक जहाज की चिमनियाँ और मस्तूल चलते हुये दिखाई दिये, मानो सिनेमा के पर्दे पर कोई दृश्य हो। उसकी बाँयी ओर डरावना दलदल था जिससे चित्रविचित्र आवाजे आ रही थी। इस उदासी के वातावरण को हल्का करने के लिए सीटी बजाने वाले इस आवारा ने एक हल्की-सी तान छेड दी और यह मुमकिन नही कि पीटरपैन की बाँसुरी के बाद इस प्रदेश की घुटी हुई नीरवता ने, इससे सुन्दर और कोई आवाज सुनी हो।

पीछे दूर सुनाई देने वाली खटखटाहट शीघ्र ही घोडे के खुरों की आवाज़ मे बदल गयी और 'व्हिसलिग' डिक जल्दी से पगडडी छोडकर ओस से भीगी घास मे एक ओर खडा हो गया। सिर घुमाते ही उसने देखा कि दो आबदार लाल घोडो से जुती, एक बढिया बग्घी आ रही थी। सफेद मूँछो वाला, एक मोटा सा आदमी, आगे की बैठक पर बैठा था, जिसका पूरा ध्यान तनी हुई लगाम पर केन्द्रित था। उसके पीछे एक शान्त मुद्रावाली प्रौढा और एक आकर्षक लडकी बैठी थी, जिसने अभी यौवन में पदार्पण भी नही किया था। बग्घी हॉकने वाले महाशय के घुटनो पर से लिहाफ कुछ खिसक गयी थी जिससे डिक को, उसके पॉवो के नीचे कनात की दो बडी बडी थैलियाँ दिखाई दी। शहरो मे मटरगश्ती करते हुए अक्सर उसने देखा था कि इसी तरह की थैलियाँ बडी सावधानी से गाडियो मे से उतार कर बैको के दरवाजो मे ले जायी जाती थी। बग्घी की बची हुई जगह अनेक प्रकार के छोटे मोटे बडलो से भरी थी।

बग्घी जैसे ही इस भटके हुए आवारा के सामने से गुजरी उस नशीली आँखो वाली लडकी ने जैसे किसी पागलपन के आवेग मे आकर गाडी से झुक कर अपनी मधुर, चाकाचौंध कर देने वाली मुस्कराहट से उसकी ओर देखा और पतली, सुरीली आवाज मे पुकारा, "क्रिसमस मुबारक!"

'व्हिसलिग' डिक के जीवन मे ऐसा मौका शायद ही कभी आया था और इसलिए इस बात का सही उत्तर देने मे उसे कठिनाई महसूस हुई। सोचने का तो समय ही नहीं था इसलिए उसने अपने सहज ज्ञान को यह काम सौप कर अपना फटा पुराना टोप सिर से उतार लिया और हाथ को आगे पीछे घुमाने लगा। उसके मुँह से एक औपचारिक 'वाह वाह' के सिवाय और कुछ नही निकला और गाडी आगे बढ गयी।

लड़की के एकाएक हिलने-डुलने से एक बंडल कुछ ढीला हो गया और उसमें से कोई नर्म-सी काली चीज़ सड़क पर जा गिरी। डिक ने उसे उठा लिया। यह काले रेशम का एक नया लम्बा, मुलायम और पतला जनाना मोजा था। वह उसकी उँगलियों में अपनी अतिशय नरमी से कुरमुराने लगा।

झुर्रियोंदार चेहरे को दो हिस्सों में बाँटती हुई, उसके मुख पर एक मुस्कान फैल गयी और वह सोचने लगा, "साली शरारती। क्रिसमस मुबारक! क्या मतलब हुआ? बुलबुल की तरह चहक गयी? मैं शर्तिया कह सकता हूँ कि आदमी काफी मालदार था। रुपये से भरी थैलियों को पाँवों के नीचे इस लापरवाही से पटक रखा था मानो उनमें भूसा भरा हो। शायद क्रिसमस की खरीददारी करने गये थे। लेकिन, सान्ता क्लाज के स्वागत के लिए खरीदा हुआ यह मोजा तो वह लड़की यहीं गिरा गयी। साली शरारती—और उसकी क्रिसमस मुबारक। मानो मुझ से कह रही हो—हैलो, डिक! क्या हालचाल है? फिफ्थ अवैन्यू के निवासियों की तरह मालदार और सिनसिनाटी वासियों की तरह खुशमिजाज!"

'व्हिसलिंग' डिक ने मोजे को सावधानी से तह करके जेब में डाल लिया।

दो घण्टे बाद वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ आबादी के लक्षण दिखाई दे रहे थे। सड़क से घूमते ही उसे एक विशाल बागान की इमारतें दिखाई दीं। जमींदार के निवास को उसने आसानी से पहचान लिया। यह एक बहुत बड़ा चौकोन मकान था जिसकी बड़ी बड़ी खिड़कियाँ रोशनी से जगमगा रही थीं और जो चारों ओर से चौड़े बरामदों से घिरा हुआ था। सामने ही साफ सुथरी हरियाली थी जो भीतर की तेज रोशनी से प्रकाशित हो रही थी। मकान के चारों ओर वृक्षों के सुन्दर झुरमुट थे और दीवारों तथा बाड़ों पर शहतूत की बेलें चढ़ी हुई थीं। मिल की इमारत और नौकरों के मकान पिछवाड़े में कुछ दूरी पर थे।

सड़क अब दोनों ओर से ऊँची ऊँची बाड़ों से घिर गयी थी। 'व्हिसलिंग' डिक बस्ती के बहुत पास पहुँच चुका था कि यकायक वह रुका और चारों ओर की हवा को सूंघने लगा।

वह अपने आप से बोला, "अगर यहाँ नजदीक में ही कहीं खानाबदोशों का भोजन नहीं पक रहा हो तो मैं यह मानूँगा कि मेरी नाक ने सच बोलना बन्द कर दिया है।"

बिना किसी हिचकिचाहट के वह उस दिशा की बाड़ पर चढ़ गया जिधर से खुशबू आ रही थी। उसने अपने आप को एक ऐसे ऊसर खेत में पाया जहाँ पुरानी ईंटों के ढेर लगे हुए थे और कबाड़ा पड़ा सड़ रहा था। एक कोने में उसे बुझती हुई आग का धुँधला-सा प्रकाश दिखाई दिया और उसे ऐसा लगा कि कुछ मनुष्याकृतियाँ धूनी के आसपास बैठी हैं, या लेटी हैं। वह पास गया और आग की एक लौ के प्रकाश में उसे फटे पुराने कपड़े, भूरा स्वेटर, और टोप पहिने हुए एक मोटा आदमी स्पष्ट दिखाई दिया।

डिक, अपने आप से गुनगुनाया, "कहीं यह मनुष्य प्रसिद्ध गुण्डा बोस्टन हैरी तो नहीं है। मैं प्रचलित संकेत से उसकी परीक्षा तो कर लूँ।"

उसने एक पुराने अमरीकी नीग्रो मूल के गीत की कुछ पंक्तियाँ सीटी में बजायीं जिनका तुरन्त प्रत्युत्तर मिला। उसके बाद शान्ति छा गयी। डिक विश्वासपूर्वक धूनी के पास पहुँचा। उसे देखते ही वह मोटा आदमी दमे के मरीज की सी फुसफुसाहट में अपने साथियों से बोला, "सज्जनों! अपने दल में अनपेक्षित, पर सम्माननीय प्रवेश करने वाले इन महाशय का नाम है—'ह्विसलिंग' डिक। ये मेरे पुराने मित्र हैं जिनकी शराफत की मैं जमानत देता हूँ। वेटर से कहिये कि फौरन एक और मेजपोश बिछाये। श्रीमान 'ह्विसलिंग' डिक खाने में हमारा साथ देंगे और भोजन करते करते यह भी बतायेंगे कि इस प्रदेश में उनके आगमन का सौभाग्य हमें किन परिस्थितियों के द्वारा प्राप्त हुआ।"

'ह्विसलिंग' डिक बोला, "वाह भई बोस्टन, अपनी हमेशा की आदत की तरह तुमने तो पूरा शब्द-कोष ही चबा डाला। फिर भी खाने के निमंत्रण के लिए बहुत बहुत धन्यवाद! मेरा अन्दाज़ है कि हम सबका यहाँ आने का कारण तो समान ही है। मुझे इस बात की सूचना एक सिपाही ने आज सुबह ही दी। क्या आप लोग इस बारात में काम करते हैं?"

बोस्टन सख्ती से बोला, "खाना खाने से पहिले इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण प्रश्नों से किसी महमान को अपने मेजबान का अपमान नहीं करना चाहिये। यह सभ्यता के खिलाफ काम है। खैर जाओ, मैं ही सब कर लेता हूँ। हम पाँचों—मैं, बहरा पीट, ब्लिकी, गागलस और इण्डियाना टाम, न्यू ओर्लियन की, अपनी गन्दी सड़कों पर आये हुए मेहमानों के खिलाफ, उस योजना से इतने परेशान हुए कि कल शाम को ही जब संध्या सुंदरी गुल-

हजारों के फूलों को अपनी रंगीन ओढ़नी ओढ़ा रही थी, वहाँ से भाग निकले। बिलकी तुम्हारी बाँई और रखा हुआ आयस्टर का खाली डब्बा दाहिनी ओर बैठे हुये भूखे सज्जन को तो झला दो!"

इसके बाद दस मिनट तक खानाबदोशों के इस दल ने अपना पूरा लक्ष्य खाने पर लगा दिया। घासलेट के एक पुराने, पाँच गैलन वाले डब्बे में उन्होंने आलू, प्याज और माँस डाल कर बिरियानी बनायी थी जिसे खेत में इधर उधर बिखरे पड़े हुए टीन के छोटे डब्बों में परोस कर, वे लोग खा रहे थे।

'व्हिसलिंग' डिक, बोस्टन हैरी को बहुत पहिले से जानता था। उनकी बिरादरी में वह एक चालाक और सफल ठग के रूप में प्रसिद्ध था। वह किसी समृद्ध आढ़तिये या देहात के किसी सफल व्यापारी सा दिखाई देता था। वह मोटा था, तन्दुरुस्त दिखाई देता था और उसके लाल चेहरे पर दाढ़ी हमेशा छँटी हुई रहती थी। उसके कपड़े मोटे और साफ सुथरे थे और अपने बढ़िया दिखाई देने वाले जूतों की ओर वह हमेशा अधिक ध्यान देता था। पिछले दस वर्षों में उसने लोगों को झूठा विश्वास दिलाकर ठगने की कला में अपने साथियों से कहीं ज्यादा प्रसिद्धि हासिल कर ली थी और इस दौरान में उसने एक दिन भी काम नहीं किया। उसके साथियों में यह अफवाह फैली हुई थी कि उसके पास काफी रुपया है। बाकी के चारों मनुष्य फटे पुराने कपड़े पहिने, शोर मचाने वाले, निर्लज्ज, आवारों के नमूने लगते थे, जिन्हें देखते ही किसी को भी उन पर सन्देह हो सकता था।

बड़े डब्बे का पेंदा जब खुरचकर साफ हो गया और सब लोगों ने अपनी अपनी पाइप सुलगा ली तब इनमें से दो आदमी बोस्टन हैरी को एक तरफ ले जाकर धीमे और रहस्यपूर्ण ढंग से आपस में बातें करने लगे। उसने निश्चयपूर्वक सिर हिलाया और फिर 'व्हिसलिंग' डिक से बोला, "बेटे, मैं साफ बात करना पसन्द करता हूँ। हम पाँचों ने एक योजना बनायी है। तुम्हारी ईमानदारी का मैंने विश्वास दिला दिया है। इस काम में तुम्हारा सब के साथ बराबर का साझा रहेगा, पर तुम्हें हमारी मदद करनी पड़ेगी! इस बागान में काम करने वाले दो सौ मज़दूरों को कल सुबह उनकी साप्ताहिक तनखाह बाँटी जायगी। कल क्रिसमस है और वे लोग पूरी छुट्टी चाहते हैं, परन्तु मालिक का कहना है कि सुबह, पाँच से नौ तक काम करके एक गाड़ी चीनी लदवा दो तो सप्ताह की तनखाह के साथ एक दिन का बोनस भी दूँगा।

मजदूरों ने इस बात को मान लिया है, इसलिए जमींदार साहब रुपये लाने के लिए न्यू आरलियन्स गये थे। २०७४'५० डालर की रकम है। मैंने ये सब बातें एक मजदूर से जानीं, जो बड़बड़ बहुत करता है। उसे यह जानकारी मुनीमजी से प्राप्त हुई थी। जमींदार साहब सोचते होंगे कि यह रुपया वे मजदूरों को बाँटेंगे – और यही उनकी गल्ती है। दरअसल यह रुपया हमें मिलेगा। यह धन निठल्लों का है और निठल्लों में ही रहेगा। देखो भई, इसमें से आधा तो मैं लूँगा और आधे में तुम सब का बराबर का साझा। तुम पूछोगे कि यह फर्क क्यों, तो मैं कहूँगा कि यह योजना मैंने बनायी है और इसके पीछे दिमाग भी मेरा ही खर्च हो रहा है। अब मैं तरीका बताता हूँ। जमींदार साहब के यहाँ आज शाम को कुछ महमान खाना खाने आये हुए हैं। पर वे लोग करीब नौ बजे चले जायेंगे। उन्हें आये हुए घण्टा भर तो हो चुका है और अगर वे जल्द ही वापस नहीं जाते तो भी हमारी योजना में कोई फर्क नहीं पड़ता। माल लेकर चम्पत होने के लिए पूरी रात चाहिये और थैलियाँ बहुत भारी होंगी। करीब नौ बजे, बहरा पीट और क्लिकी, सड़क के किनारे किनारे मकान से कुछ दूरी पर जाकर ऊख के किसी खड़े खेत में आग लगा देंगे। हवा तेज है, दो ही मिनट में होली सी जल उठेगी। खतरे की घण्टी बजेगी और दस मिनट में चारों तरफ के आदमी आग बुझाने दौड़ेंगे। इससे मकान में रह जायेंगी–सिर्फ औरतें और रुपयों की थैलियाँ! तुमने कभी ऊख के खेत को जलते देखा है? ऐसे चटाखे बजते हैं कि उनको भेद कर किसी औरत की चीख सुनाई नहीं दे सकती। काम में कोई खतरा नहीं। डर सिर्फ एक है कि काफी दूर निकल जाने से पहिले ही कहीं पकड़े न जाँय! तुम्हारा काम..."

'व्हिसलिंग' डिक ने उसे बीच ही में टोक दिया और खड़ा होकर बोला, "बोस्टन, खाना खिलाने के लिए तुम्हें और तुम्हारे साथियों को धन्यवाद। पर मैं अब चला।"

बोस्टन ने भी खड़े हो कर पूछा, "क्या मतलब?"

"मतलब यह कि मैं इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहता। तुम्हें यह मालूम भी होना चाहिये। यह तो माना कि मैं आवारा हूँ पर यह एक अलग बात है। डकैती मेरे बस का रोग नहीं। इसलिए फिर एक बार धन्यवाद और नमस्कार।"

यह कहते कहते 'व्हिसलिंग' डिक कुछ कदम आगे बढ़ गया पर एका-एक उसे रुकना पड़ा। बोस्टन ने उसके सामने अपनी छोटी पिस्तौल तान रखी थी।

दल का मुखिया बोला, "अपनी जगह पर बैठ जाओ। मैं इतना बेवकूफ नहीं कि तुम्हें जाने दे कर सब गुड़ गोबर कर दूँ! जब तक हम काम पूरा न कर लें, तुम यहाँ से जा नहीं सकते। वह ईंटों का ढेर देख रहे हो — वह तुम्हारी सीमा है। उससे एक इंच भी बाहर कदम रखा तो मैं तुम्हें गोली से उड़ा दूँगा। समझदारी से काम लो और आराम से बैठ जाओ।"

'व्हिसलिंग' डिक बोला, "मैं तो खुद ही आरामतलब हूँ; यह लो बैठ जाता हूँ। महरबानी करके अपनी पिस्तौल का मुँह नीचा करो और अपने काम में लगो। जैसा कि अखबारवाले कहा करते हैं, मैं तुम्हारे ही साथ हूँ।"

बोस्टन ने "बहुत अच्छा" कह कर पिस्तौल हटा ली और डिक वापिस आकर मलबे में पड़े हुए एक तख्ते का सहारा ले कर बैठ गया।

बोस्टन ने कहा, "भागने की कोशिश मत करना! मैं इतना ही चाहता हूँ। मैं किसी भी कीमत पर यह मौका हाथ से जाने देना नहीं चाहता। चाहे मुझे अपने पुराने दोस्त को गोली ही क्यों न मार देनी पड़े! मैं किसी को कोई खास नुकसान पहुँचाना नहीं चाहता पर इन हजार डालर से तो मेरी ज़िन्दगी बन जायगी। मैं अब यह आवारागर्दी का काम छोड़ कर किसी छोटे से शहर में मयखाना चलाना चाहता हूँ। इधर उधर भटक भटक कर अब थक गया हूँ।"

बोस्टन हैरी ने जेब में से एक सस्ती सी चाँदी की घड़ी निकाली और आग की रोशनी में समय देखा।

वह बोला, "इस समय पौने नौ बजे हैं। पीट और बिलकी, तुम लोग जाओ। सड़क के किनारे, मकान से कुछ आगे जा कर ऊख में कोई दस बारह जगह आग लगा दो। फिर सीधे नदी की ओर भाग जाना और वहाँ से सड़क के बजाय धक्के के किनारे चले आना। रास्ते में कोई देखे नहीं। जब तक तुम लोग लौटोगे, सब के सब आदमी आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े होंगे। और हम मकान पर हमला कर के रुपये अशर्टी कर लेंगे। जिसके पास जितनी दियासलाइयाँ हों, निकाल दो।"

उन दोनों ठगों ने दियासलाइयाँ बटोर लीं जिसमें 'व्हिसलिंग' डिक ने भी, उसे सन्तुष्ट करने के लिए, फुर्ती से अपना योगदान दे डाला। वे दोनों, तारों के क्षीण प्रकाश में सड़क की ओर चले।

बचे हुये तीन ठगों में से दो, गागल्स और इण्डियाना टाम, 'व्हिसलिंग' डिक की ओर स्पष्ट नफरत की दृष्टि से देखते हुए तख्तों के सहारे वहीं आराम से लेट गये। भगोड़ा रंगरूट चुपचाप बैठा है, यह देख कर बोस्टन ने भी अपना पहरा कुछ हल्का कर दिया। कुछ देर बाद 'व्हिसलिंग' डिक उठ खड़ा हुआ और अपने लिए निर्धारित सीमा के भीतर टहलने लगा।

कुछ देर रुक कर उसने बोस्टन हैरी से पूछा, "रुपया, जमींदार के घर में ही है, यह तुम कैसे कह सकते हो?"

बोस्टन बोला, "मुझे इन सब बातों की सूचना मिल चुकी है। वह आज ही न्यू आरलियन जाकर रुपया लाया है। क्या तुम्हारा विचार बदल गया? हमारा साथ देना है?"

"नहीं, नहीं मैं तो यों ही पूछ रहा था। जमींदार के घोड़े कैसे हैं?"

"लाल रंग की जोड़ी है"

"और उनके बग्घी है?"

"हाँ"

"क्या उनके साथ औरतें भी थीं?"

"हाँ—उसकी पत्नि और लड़की। पर यह तो बताओ, तुम किस अख़बार के सम्वाददाता हो?"

"नहीं भई, मैं तो यों ही समय काटने को पूछ रहा था। पर अन्दाज है कि आज शाम को मुझे रास्ते में वही बग्घी मिली थी।"

जेब में हाथ डाल कर धूनी के चारों ओर के उस सीमित क्षेत्र में टहलते टहलते डिक ने सड़क पर पाये हुए उस मौके को टटोला और हँसते हुए वह गुनगुनाया, "साली शरारती।"

टहलते टहलते, उसे झुरमुट के बीच से कोई पचहत्तर गज की दूरी पर, जमींदार का घर दिखाई दे रहा था। मकान की इस ओर की दीवार में रोशनी से जगमगाती, बड़ी बड़ी खिड़कियाँ थीं, जिनका मन्द प्रकाश बरामदे को पार कर के, दूर की हरियाली तक छाया हुआ था।

बोस्टन ने चौंक कर पूछा, "क्या कहा तुमने? कौन शरारती?"

" नहीं, कुछ नहीं। " इतना कह कर ' व्हिसलिंग ' डिक लापरवाही से लेट गया और जमीन पर पड़े एक पत्थर की ओर तल्लीनता से देखने लगा।

वह चहचहाया, " क्या शान ? – कितनी मिलनसारी – क्रिसमस मुबारक! अब क्या विचार हैं ? "

बैलमीड़ बागान के भोजनगृह में आज खाना परोसने में दो घण्टे की देरी हो गयी थी। भोजनगृह और उसका साजोसामान यह सूचित करते थे, कि उसकी पुरानी शान, कोई भूली हुई याद न हो कर, एक हक़ीकत थी। खाने और परोसने के बरतन इतने कीमती थे कि यदि वे काफी पुराने और अजीब न होते तो भड़कीले मालूम देते; दीवारों पर टँगी हुई तस्वीरों के कोनों में दिलचस्प नाम लिखे हुए थे और खाना तो इतना लज़ीज था कि भोजनभट्टों के मुँह से लार टपक पड़े। परोसगारों की सेवा फुर्तीली, शान्त और प्रचुर थी जो उस जमाने की याद दिलाती थी जब नौकरों का भी कीमती बर्तनों की तरह 'पूजी' में शुमार होता था। ज़मींदार के सगे सम्बन्धी और महमान एक दूसरे को जिन नामों से सम्बोधित कर रहे थे, वे दो देशों के इतिहास में प्रसिद्ध थे। उनकी तहजीब और बातचीत के ढंग में एक दुर्लभ सरलता थी जिस पर अभी तक हमारा शिष्टाचार टिका हुआ है। अधिकतर उल्लास और हाज़िरजवाबी का स्रोत जमींदार साहब खुद थे। टेबल पर बैठे हुए अपेक्षाकृत जवान लोगों के लिए उनकी मजाकों और टिप्पणियों से बचना मुश्किल था। यह सच है, कि लड़कियों की नज़रों में ऊँचा उठने की आशा से युवकों ने उनका मुकाबला करने की पूरी कोशिश की परन्तु जब जब उन्होंने अपने तीरों की बौछार की, जमींदार साहब ने अपनी हाज़िर जवाबी और अपने गरजते हुए अट्टहास से उन्हें परास्त कर दिया। टेबल के एक सिरे पर सौम्य, दयालु, ममतामयी गृह-स्वामिनी बैठी थी, जो उचित समय पर मुस्करा कर, या दो चार शब्द बोलकर, अपनी निगाहों से लोगों का उत्साह बढ़ा रही थी।

बातचीत इतनी बेतरतीब और अव्यवस्थित थी, कि विषय का पता ही नहीं चलता था। पर अन्त में आवारों के उत्पात की बात चली, जिन्होंने कई दिनों से आसपास के बागानों को परेशान कर रखा था। ज़मींदार ने इस अवसर से लाभ उठा कर, निश्छल मजाक का फव्वारा अपनी पत्नी पर छोड़ते हुए, इस बीमारी को फैलाने, में उन्हें ही उत्तरदायी ठहराया। वे बोले, "हर

बरस सर्दियों में इन लोगों के झुण्ड आ जाते हैं। पहले तो वे न्यू आरलियन्स पर टूटते हैं और बचे खुचे हमारे सिर आ पड़ते हैं जो सब से बुरी बात है। दो एक दिन पहिले ही श्रीमती न्यू आरलियन्स को एकाएक यह महसूस हुआ कि चबूतरों पर धूप खाते हुए, इन आवारों के झुण्डों से टकराये बिना तो वह खरीददारी के लिए भी नहीं जा सकती। अपने सिपाहियों को बुलाकर उसने हुक्म छोड़ा, "इन सब को गिरफ्तार कर लो।" सिपाहियों ने दस बीस को तो पकड़ा, पर बचे हुए दस बीस हजार, नदी के दोनों ओर बिखर गये और एक हमारी श्रीमतीजी हैं जो उन्हें भरपेट भोजन कराती हैं। अन्तिम बात उन्होंने अपनी पत्नी की ओर उँगली दिखा कर कही। वे कहते रहे, "ये लोग काम तो करना नहीं चाहते; मुकादमों से झगड़ते हैं और कुत्तों से दोस्ती करते हैं। और श्रीमती जी, तुम मेरी नज़रों के सामने उन्हें खाना खिलाती हो और जब मैं रोकता हूँ तो मुझे ही धमकाती हो! सच बताओ, आज इसी तरह तुमने कितने आदमियों को आलसी और आवारा बने रहने की प्रेरणा दी?"

गृहस्वामिनी ने हल्की मुस्कान बिखेरते हुए कहा, "यही कोई छः! क्या तुम जानते हो, उनमें से दो तो काम करने के लिए भी राजी थे? तुमने भी तो सुना था!"

जमींदार साहब की निरुत्तर कर देनेवाली हँसी गूँज उठी।

वे बोले, "हाँ, करना तो चाहते थे, पर केवल अपना ही पुराना काम! एक नकली फूल बनाना जानता था, दूसरा काँच मोड़ सकता था। ओह, वे काम ढूँढ़ रहे थे। मजूरी करने में तो उनकी हड्डी भी नहीं झुकती थी!"

दयालु गृहस्वामिनी कहने लगी, "और दूसरा आदमी काफी अच्छी भाषा बोल लेता था। आवारों की बारात में वह वाकई अनोखा था! उसके पास एक बड़ी भी थी! वह बोस्टन में रह चुका था। मैं नहीं मानती कि वे सब बिगड़े हुए होते हैं। मुझे तो लगता है कि उनका विकास नहीं हो सका है। मैं उन्हें उन बच्चों के समान मानती हूँ जिनका ज्ञान रुक गया है और मूँछें बढ़ गयी है। आज घर लौटते समय एक ऐसा ही लड़का रास्ते में भी मिला था जिसका चेहरा जितना अच्छा था उतना ही फूहड़! अपने मुँह से सीटी द्वारा वह 'केवेलेरिया' की तानें इस तरह बजा रहा था, मानो अपने स्वरों में स्वयं मेसकेग्नि की आत्मा उँडेल रहा हो!"

गृहस्वामिनी के बाँई ओर बैठी हुई, चमकीली आँखोंवाली लड़की कुछ झुकी और अपने विश्वासपूर्ण, धीमे स्वरों में बोली, "क्या यह संभव है माँ, कि रास्ते में गुजरनेवाले उस आवारा को मेरा मोजा मिला हो? क्या वह उसे टाँगेगा? पर मैं तो आज केवल एक ही टाँग सकूँगी! तुम्हें पता है, मेरे पास इतने मोजे होने पर भी मैंने यह नयी रेशमी मोजों की जोड़ी क्यों ली? बूढ़ी चाची जुड्डी कहती थी कि अगर तुम बिना पहिने हुए, दो मोजे लटकाओ तो उनमें से एक तो सान्ताक्लाज अच्छी अच्छी चीजों से भर देते हैं और क्रिसमस के पहले दिन, तुम्हारे द्वारा बोले गये, भले बुरे सभी शब्दों की कीमत श्रीमान पाम्बे, दूसरे मोजे में रख जाते हैं। इसीलिए तो आज सारा दिन मैं हद से ज्यादा नम्र रही। तुम्हें पता है – महाशय पाम्बे जादूगर हैं और..."

एक चौंका देने वाली वस्तु ने लड़की के शब्दों पर बीच ही में रोक लगा दी।

किसी टूटते हुए तारे की प्रकाशरेखा की तरह एक काली चमकदार चीज़ खिड़की का काँच तोड़ कर टेबल पर आ गिरी, जहाँ उसने काँच और चीनी के बर्तनों को हजार टुकड़ों में बाँट कर उछाल दिया। महमानों के बीच से गुजरती हुई यह उल्का सामने की दीवार पर टकरायी, जहाँ उसके वेग से एक बड़ा सा गड्ढा बन गया जिसे बैलमीड के महमान आज भी आश्चर्यचकित दृष्टि से देखते हैं और तब उन्हें इसके बाद की कहानी सुनायी जाती है।

औरतें, अनेक स्वरों में चीख उठीं, आदमी अपने पंजों पर उछल पड़े और अगर उनके वंशों की विविधता ने उन्हें रोक नहीं दिया होता तो वे अपनी तलवारें खींच लेते।

सब से पहले जमींदार साहब उछले और उन्होंने उस फेंकी हुई वस्तु को उठा कर जाँचना शुरू किया।

वे कहने लगे, "भगवान् की कसम, नक्षत्रलोक से आज मोजे बरस रहे हैं। कहीं मंगलग्रह से तो हमारा रिश्ता नहीं जुड़ गया है!"

जवान लड़कियों से 'वाह वाह' पाने की आशा में एक युवक महमान ने संशोधन किया, "मेरे खयाल से शुक्रग्रह से!"

जमींदार साहब ने हाथ लम्बा कर के वह एकाएक आ टपकनेवाली वस्तु सब को दिखायी। वह एक लम्बा, औरतों का काला मोजा था। उन्होंने कहा, "अरे, इसमें तो माल भरा है!"

उन्होंने अपने पैर के पंजों से पकड़ कर उस मोजे को उल्टा लटकाया और उसमें से पीले रंग के कागज के टुकड़े से लपेटा हुआ एक गोल पत्थर जमीन पर आ गिरा। वे चिल्लाये, "लो, इस शताब्दि का पहला दैवी सन्देश!" और अपने इकट्ठे हुए मेहमानों की भीड़ के सामने सिर हिलाते हुए उन्होंने अपने चश्मे को जबरदस्ती ऊँचा नीचा करके, उसे करीब से देखा। उसे पढ़ कर समाप्त करते ही यह मजाकी मेजबान, किसी व्यापारी की तरह कठोर व्यवहारिक आदमी में बदल गया। उसने घण्टी बजायी और उसे सुनकर नीरव पदों से सामने हाजिर होने वाले चौकीदार को आदेश दिया, "मि. वेस्ले से जाकर बोलो कि वह रीव और मारिस और कोई दस दूसरे मजबूत आदमियों को लेकर बाहर के दरवाजे पर अभी आ जाय। उसे कहना कि आदमियों को हथियार दे दे और बहुत से रस्से और डोरियाँ भी ले आयें। उसे बोलो—जल्दी करे।" और तब उन्होंने उस पन्ने से ये शब्द पढ़ कर सुनाये—

"इस घर के मालिक के नाम,

सड़क के पास खाली मैदान में जहाँ ईंटों का ढेर लगा है, मेरे अलावा पाँच और तगड़े खानाबदोश छिपे हैं। उन्होंने मुझे पिस्तौल दिखा कर रोक रखा है, इसलिए मैं समाचार भेजने का यह तरीका अपना रहा हूँ। उनमें से दो, घर के पास वाले ऊख के खेत में आग लगाने चले गये हैं। जब घर के सारे आदमी आग बुझाने जायेंगे तब बाकी के आदमी आकर घर में से उस सारे धन को लूट लेंगे जो मजूरों को चुकाने के लिए लाया गया है। इसलिये चेत जाना। गाड़ी में जाते हुए रास्ते में जिस लड़की ने यह मोजा गिरा दिया था, उसे वैसा ही "क्रिसमस मुबारक" कहना जैसे उसने मुझे कहा था। सड़क पर बैठे गुण्डों को पहले पकड़ लेना और फिर मेरे लिए राहत भेजकर मुझे बचाना। आपका,

व्हिसलिंग डिक!"

अगले आधे घण्टे तक बैलमीड के बागान में चुपचाप, फुर्ती से भागदौड़ होती रही जिसके फलस्वरूप पाँच निराश और अभागे आवारा पकड़े जा कर, सूरज और पुलिस के प्रकट होने तक बाहर के गोदाम में सुरक्षित बन्द कर लिये गये। दूसरा शुभ परिणाम यह हुआ कि महमान युवकों की विशेष बहादुरी ने महमान युवतियों की प्रशंसा अर्जित कर ली। और इससे भी ज्यादा मजे की बात यह हुई कि इस काण्ड का नायक, 'व्हिसलिंग' डिक,

जमींदार के साथ बैठा हुआ, उन व्यंजनों पर हाथ साफ कर रहा था जिन्हें सूँघने का भी जीवन में उसे अवसर नहीं मिला था। उसकी तीमारदारी करने के लिए कई इतनी सुन्दर, भव्य और प्रशंसनीय ललनाएं उसकी सेवा में तैनात थीं, जिन्हें देख कर अपना मुँह रोटी से पूरा भरा हुआ होने पर भी वह अपने आप को सीटी बजाने से नहीं रोक पाता। बोस्टन हैरी के आवारा दल के साथ हुए सम्पर्क की जीवट कथा ब्यौरेवार सुनाने के लिए उसे विवश किया गया—"कैसे उसने वह चिट्ठी लिखी, कैसे उसे पत्थर के चारों ओर लपेट कर उसने मोजे के पंजे में उसे रखा, और कैसे उसने मौका देख कर आश्चर्यजनक गति के साथ, एक तारे की तरह गुपचुप भोजन करने के कमरे की जगमगाती खिड़की के काँच पर निशाना मारा!"

जमींदार साहब ने निश्चय कर लिया कि यह घुमक्कड़ अब और नहीं घूमेगा। उसकी सचाई और ईमानदारी को पुरस्कृत किया जाय और उसकी कृतज्ञता का मोल चुकाया जाय; क्योंकि उनको निश्चित नुकसान से, बल्कि उससे भी बड़ी आफत से बचानेवाला बेशक वही था। उन्होंने 'व्हिसलिंग' डिक को विश्वास दिलाया कि उसकी योग्यता के अनुसार जल्दी से जल्दी ढूँढ़ कर काम देना, उनकी खुद की जिम्मेदारी रही। उन्होंने यह भी संकेत किया कि बागान में प्राप्त सर्वोच्च और विश्वासवाले किसी पद तक ऊँचा उठाने में उसकी हमेशा सहायता की जायगी।

उनके ध्यान में यह भी आया कि वह अब काफी थक गया होगा और सबसे पहले जो काम करना चाहिये, वह है—उसके आराम और सोने का इन्तजाम। इसलिये गृहस्वामिनी ने एक नौकर को बुलाया। नौकरों के सोने के पास ही बरामदेवाले कमरे में एक टब पानी से भर कर उसके उपयोग के लिए रख दिया गया और वह वहाँ रात बिताने के लिए छोड़ दिया गया।

मोमबत्ती के प्रकाश में उसने कमरे का निरीक्षण किया। चद्दर लगा हुआ एक बिस्तर, जिस पर गिलाफ लगे हुए तकिये। एक पुरानी पर साफ, लाल दरी, फर्श पर बिछी हुई। एक तिरछे कटे हुये दर्पण वाला सिंगारदान। एक हाथमुँह धोने का बेसिन जिसके पास गिलास और तसला। दो तीन कुर्सियाँ यथास्थान जमायी हुई। एक टेबल, जिस पर किताबें और अखबार; एक फूलदान में गुलाब के फूलों का गुच्छा! हाथमुँह धोने की जगह पर तौलिये और साबुन।

'ह्विसलिंग' डिकने सावधानी से मोमबत्ती एक कुर्सी पर लगायी और अपना टोप टेबल के नीचे डाल दिया। सयत होकर छानबीन करके उसने अपनी जिज्ञासाओ को शान्त कर लिया, फिर अपना कोट उतारा और उसे समेट कर दीवार के सहारे, बाल्टी से कुछ दूर रख दिया। अपने कोट का तकिया बना कर वह दरी पर ही आराम से लेट गया।

क्रिसमस की सुबह, झाडियो पर उजाले की पहिली किरण फूटते ही, 'ह्विसलिंग' डिक की आँख खुली। अपनी सहज प्रवृत्ति के कारण उसने टोप उठाने के लिए हाथ बढाया। तब उसे याद आया कि पिछली रात, सौभाग्य ने उसे अपनी बाँहो मे समेट लिया था। उसने खिडकी के पास जा कर पर्दा ऊँचा किया जिससे ताजी हवा के ठडे झोके उसे छू सके और अप्रत्याशित सौभाग्य की स्वप्नवत याद उसके दिमाग मे जम सके।

वहाँ खडे होने पर कई डरावनी सर्वव्यापी ध्वनियाँ से उसके कानो के पर्दे फटने लगे।

बागानो मे काम करनेवाले मजदूरो का दल, कम समय में काम पूरा करने के लिए कटिबद्ध था। श्रमरूपी दैत्य के कोलाहल से धरती काँप रही थी। इस जादुई महल की खिडकी को मजबूती से पकड कर स्थिर खडा, यह फटेहाल छद्मवेशी राजकुमार जो खजाने की खोज मे निकला था, काँप उठा।

अभी से ही मिल की छाती से, शक्कर भरे, लकडी के ढोल गुडकने की गर्जन सुनाई दे रही थी। गाडी के जुए के नीचे जोतने के लिये भगाये जाने वाले बैलो की जजीरो से तीव्र खनखनाहट की आवाज उठ रही थी (जैसी जेलो मे होती है)। बागान की छोटी लाइन की रेल की पटरी पर, जजीर की तरह गुँथे हुए खुले डिब्बो को खीचता हुआ एक छोटा, अवम इजन उबल उबल कर धुँआ छोड रहा था। उस आधे अँधेरे मे फुर्ती से परिश्रम करते हुए, शोर करते श्रमिको की धारा, शक्कर की पैदावार को गाडी मे लादती हुई अस्पष्ट दिखाई दे रही थी। यह काव्य है, महाकाव्य है—नही, एक दुखान्त नाटक है जिसकी कथावस्तु, इस ससार का अभिशाप 'परिश्रम' है।

दिसम्बर की बर्फीली हवा चल रही थी, फिर भी डिक के माथे पर पसीना आ गया। उसने खिडकी से बाहर सिर निकाल कर नीचे झाँका। उससे कोई

पन्द्रह फीट नीचे मकान की दीवार के सहारे फूलों की पाँत लगी हुई थी जिससे उसे यह अन्दाज हो गया कि नीचे की मिट्टी काफी मुलायम है।

एक चोर की तरह, धीमे से, खिड़की के चौखटे से बाहर निकल कर वह नीचे की तरफ अपने हाथों के सहारे लटक गया और सुरक्षित कूद गया। घर के इस तरफ, आसपास कोई आदमी नहीं था। वह झुक कर जल्दी से आँगन को पार कर गया और जहाँ चहारदीवारी सब से कम ऊँची थी, वहाँ पहुँचा। उसे फाँद जाना काफी आसान था क्योंकि उसके हृदय में एक ऐसी दहशत पैदा हो चुकी थी जो शेर द्वारा पीछा किये जाने पर एक बारहसींगे को भी कँटीली झाड़ियों पर से कुदा देती है। ओस से भींगी हुई झाड़ियों को पार करता हुआ वह सड़क तक पहुँचा और फिसलन वाली घास के एक छोटे से मैदान को पार करके वह धक्के के ऊपर, पगडंडी पर पहुँच गया। अब वह स्वतंत्र था।

पूरब में ऊषा शरमा रही थी। आवारा और घुम्मकड़-सी हवा ने भी गाल पर हल्का-सी चपत लगा कर अपने इस भाई का स्वागत किया। ऊँचाई पर उड़ती हुई जंगली बत्तखें चीख रहीं थी। उसके सामने ही पगडंडी को पार कर के एक खरगोश भागा जो स्वेच्छा से दाँयें—बाँयें कहीं भी जाने को स्वतंत्र था। पास ही में नदी बह रही थी और निश्चय ही यह कोई नहीं बता सकता था कि उसके प्रवाह की अन्तिम मंजिल कहाँ है!

एक पेड़ की टहनी पर एक छोटी चंचल भूरे रंग की चिड़िया ने अपनी धीमी, कोमल, चहक से शबनम का स्वागत किया, जिसे सुनकर मूर्ख कीड़े बिल से बाहर निकल आते हैं। लेकिन एकाएक चिड़िया रुक गयी और एक ओर मुँह फेर कर सुनने बैठ गयी।

पगडंडी के उस ओर से, बाँसुरी की सी मीठी, उत्साहपूर्ण, मर्मवेधी, उत्तेजक, सीटी की आवाज स्पष्ट सुनाई दे रही थी। इस आवाज में एक ऐसा आग्रह और माधुर्य था, जो जँगली पंछियों की ताल में अकसर नहीं पाया जाता। इस जँगली और मुक्त माधुर्य ने चिड़िया को किसी परिचित तान की याद दिलादी—लेकिन कौन सी तान—वह नहीं जान सकी। इसमें पंछियों की कूक का सुरीलापन तो था पर साथ ही ऐसी बहुत सी, व्यर्थ की रंगीनी भी थी जिसे कला ने जोड़ा और सँवारा था और जो चिड़िया के लिए एक विचित्र पहेली के समान था। इसलिये चिड़िया भी गर्दन झुका कर, उस आवाज को विलीन होने तक सुनती रही।

चिड़िया यह नहीं जान सकी कि उस गूँजन का जो भाग उसकी समझ में आया उसीके कारण गूँजने वाले का नाश से वंचित होना पड़ा। वह यह अच्छी तरह से जानती थी कि जो उसकी समझ में नहीं आया उससे उसका कोई वास्ता नहीं। इसलिये वह पंख फड़फड़ाकर तीर की तरह उस मोटे कीड़े पर झपटी जो पगडंडी पर आगे बढ़ा जा रहा था।

गिरफ्तारी

प्रेसिडेण्ट मिराफ्लोर्स और उनकी साथिन की गिरफ्तारी की जो योजना बन चुकी थी, उसके असफल होने की कोई सम्भावना नहीं थी। अलाजान के बन्दरगाह पर पहरा बैठा देने के लिए डा जावाला खुद पहुँच गये थे। स्वतन्त्र देशभक्त वरास पर भरोसा किया जाता था कि वह कोरालियो के मोर्चे को सम्हाल लेगा और कोरालियो के चारों ओर के प्रदेश की जिम्मेदारी खुद गुडविन ने अपने ऊपर ले ली थी।

सत्ता हड़प लेने की महत्त्वाकांक्षा रखनेवाले विरोधी राजनैतिक दल के कुछ इने गिने विश्वस्त सदस्यों के सिवाय प्रेसिडेण्ट के भागने की खबर, समुद्र किनारे के शहरों में किसी को भी नहीं थी। जावाला के साथियों ने सानमाटियो से बन्दरगाह तक आने वाली तार की लाइन को पहाड़ियो के बीच काट दिया था। इसकी मरम्मत हो सकने से पहिले और राजधानी से प्रेसिडेंट के भागने के समाचार, किनारे के शहरो तक पहुँचने से बहुत पहिले ही वह पलायनशील जोड़ी किनारे तक पहुँच जाती और उनकी गिरफ्तारी या बचाव का प्रश्न हल हो जाता।

कोरालियो की दोनो दिशाओ मे समुद्र के किनारे किनारे एक एक मील तक गुडविन ने हथियारबन्द सन्तरियो का पहरा बिठा दिया। उन्हे रात भर सतर्कता से देखभाल करने का आदेश दिया गया जिससे मिराफ्लोर्स छिपकर किसी छोटी मोटी डोंगी से भागने की कोशिश न कर सके। कैरालियो की